काहे करेल हो बाबूजी, दु रंग नीतियाँ
बेटा के पढ़ावे खातिर स्कूल भेजवले,
हमर बेरिया, काहे झाड़ू लगावले,
काहे करेल हो बाबूजी, दु रंग नीतियाँ। **(भोजपुरी पारंपरिक गीत)**

भारतीय समाज में स्त्रियों को मर्यादा के नाम पर सामाजिक बंधनों से जकड़ा गया है। संस्कृति, संस्कार एवं परंपराओं के नाम पर उसकी आकांक्षाओं को हमेशा कुचला जाता रहा हैं। इन लोकगीतों के माध्यम से नारी मन की व्यथा को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। जहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक उनके साथ भेद–भाव किया जाता रहा है:–

''कुस ओढ़न कुस डासन बन फल भोजन रे,
ए ललना सुखुड़ी के जरेला पँसगिया निनरियौ ना आवेला रे।''.....**(भोजपुरी गीत)**

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी क्षेत्रों में जीविकोपार्जन के लिए पुरूषों का पलायन एक बहुत बड़ी समस्या है। घर में पुरूषों की अनुपस्थिति से महिलाओं को अनेको कष्ट का सामना करना पड़ता है। परदेश गए पति को लोकगीतों के माध्यम से उलाहना देने का स्वर सुना जा सकता है:–

तोहरो जे मैया प्रभु हो आवारी छिन्नरिया हो,
तौली नापिये तेलवा दिहला हो राम,
तोहरो बहिनिया प्रभु हो आवारी छिन्नरिया हो,
लोई गनिये हाथवा के दिहलां हो राम.....**(भोजपुरी गीत)**

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में नारी मन की संवेदना स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। जहाँ पर हर्ष, उल्लास, व्यंग्य एवं दु:खों की सहज अभिव्यक्ति है। पुरूष प्रधान समाज में नारी व्यंग्य के साथ प्रतिकार करती हुई दिखलाई पड़ती है। बाल–विवाह, अनमेल–विवाह, बेटा–बेटी में असमानता, पुरूषों का तानाशाही रवैया और जीविकोपार्जन के लिए पति का महानगरों में पलायन के चित्र भी दिखलाई पड़तें है। पति के पराई स्त्री के मोहपाश में बंधने का संशय एवं विभिन्न तीज–त्यौहार में पति के साथ नहीं होने का दु:ख, सास–ससूर के ताने आदि के चित्र लोकगीतों में स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। लोकगीतों के माध्यम से महिलाएँ तीज–त्यौहारों में खुशियाँ मनाती है। पुत्र–पुत्री के जन्म में सोहर गाती है। मांगलिक उत्सव में संस्कार गीत गाती है। साथ ही सामाजिक कुप्रथाओं जैसे– शराबखोरी, जूआँ एवं अनाचार पर प्रतिकार करती है।

उपसंहार :–

उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि छत्तीसगढ़ी एवं भोजपुरी लोकगीतों में सांस्कृतिक समानता है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कार गीतों के भाव में साम्यता के साथ–साथ यहाँ पर धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित समान भाव के लोकगीत प्रचलित है। पर्व, त्यौहार एवं मांगलिक अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीतों में पलायन, नारी संवेदना एवं श्रृंगार भावना पर आधारित लोकगीतों में पर्याप्त साम्यता है। जिसमें जीवन के विविध चित्र दिखलाई पड़ते है। भारतवर्ष की गौरवशाली संस्कृति और राष्ट्रीय एकीकरण में इस सांस्कृतिक समानता का बहुत महत्व है।

संदर्भ स्त्रोत :–

1. डॉ. सत्यभामा आड़िल– छत्तीसगढ़ भाषा और संस्कृति, विकल्प प्रकाशन, रायपुर (छ. ग.)।
2. डॉ. शकुन्तला वर्मा– छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद (उ. प्र.)।
3. दयाशंकर शुक्ल– छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)।
4. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 1), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (उ. प्र.)।
5. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 2), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (उ. प्र.)।
6. श्री कृष्ण देव उपाध्याय– भोजपुरी लोकगीत, (भाग 3), भोजपुरी एकेदमी, पटना।
7. शंकर सेन गुप्ता– भारतीय लोक संस्कृति अध्ययन, इंडियन पब्लिकेशन, कलकत्ता।
8. संपादक – निराला बिदेसिया– लोकराग गीतमाला, (ई–पुस्तिका)।
9. डॉ. अजय कुमार शुक्ल – समकालीन हिन्दी कविता में लोकतात्विक प्रवृत्तियों का अध्ययन, शोध प्रबंध, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ. ग.)।
10. डॉ. अजय कुमार शुक्ल – मड़वा की रौनक, lok-sagar.blogspot.com
11. स्मिता तिवारी– उत्तर भारत के लोकगीत, ड्यूक विश्वविद्यालय, (यू. के.)।
12. गुरतुर गोठ– ई–पत्रिका।
13. कविता कोश– ई–पत्रिका।